प्राणिक ऊर्जा : विशिष्ट उपचार

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

पिछले 27 (सत्ताइस) अंको में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का संचार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जौ भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्त्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं व क्या लाभ हैं, भौतिक शरीर में चक्रों का क्या महत्व है व इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता हैः ऊर्जा (आभा) के परत, उनका महत्व और उससे शारीरिक स्वास्थ्य में, क्या लाभ होगा, तथा शारीरिक रोगों के निदान में प्राणिक उपचार (हीलिंग), ऊर्जा के सात चक्रों को जाग्रित करने के बारे में तथा मौलिक उपचार के लिए स्तर-ह्व व विशिष्ट उपचार स्तर-ह्ह में प्रत्यक्ष ऊर्जा के लिए विजुअलाइजेशन व अवरूद्ध चक्र, औरिक ऊर्जा की अशुद्धिया, आभा और चक्रों के गूढ़ ज्ञान, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों को पढ़ने की जानकारी से पूर्णतः अवगत हुये थे। इस अंक में, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों के पार्दर्शिता के पश्चात कैंसर, हृदय, मधुमेह आदि रोगियों के कुछ आवश्यक सलाह का शेष भाग दिया गया है।

(भाग-28)

क्रमशः......

सर्जरी से रिकवरीः अतिरिक्त ऊर्जा से अधिक समय के लिये प्रभावित क्षेत्र पर और प्रभावित क्षेत्र के आस-पास चक्रों का इलाज करें। प्रभावित क्षेत्र के पास औरिक दोष या अशुद्धियों को हताने की आवश्यकता हो सकती है। यह विधि, सामान्य उपचार प्रक्रिया के रूप में, रोगमुक्त करने और रोगी को अत्यधिक लाभ पहुंचाने में उपयोगी है।

मरने की स्थिति मे देखभालः जो मरीज़ मरने की स्थिति से गुजर रहे हैं, उनके लिए भी यह ऊर्जा उपचार एक तरह से बहुत उपयोगी है। क्योकि ऊर्जा का प्रवाह एक आरामदायक उपाय है। मरीज को आराम और सहूलियत प्रदान करने की तलाश करें। चक्र प्रणाली में किसी भी चक्र को अस्वास्थ्यकर महसूस होता है, अस्वास्थ्यकर रंग दिखाता है, या अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता होती है, एक विस्तारित अवधि के लिए ऐसे सभी चक्रों का इलाज करना चाहिए। मरीज को किसी भी तरह से इलाज करें, जिसके करने में आपको आसानी महसूस होती हैं, फायदेमंद दिखते हैं या ऐसा करने के लिए उत्साहित महसूस करते हैं। ऐसे मरीजो को सप्ताह में दो-बार उपचार करने से वे लाभ पा सकते हैं।

गर्भावस्थाः गर्भवती महिलाओं को हमेशा उपचार के लिए इलाज देने वाले के तरफ लेटा होना चाहिए। जिससे उसके वह सामान्य हाथ की स्थिति को इस तरह से बदल सके कि यदि आप चाहें, एक ही समय में चौथे, तीसरे और दूसरे चक्रों के दोनों तरफ (बोथ-साइड्स) का इलाज कर सके। यदि आप ऐसा करते हैं, तो सामने वाले हिस्से (घटक) पर अपनी दाहिनी हथेली केंद्र को रखें और पीछे के हिस्से पर अपनी बाएं हाथ हथेली रखे। एक मां जो बच्चे का जन्म दिया है, उसे गर्भ जनन की प्रक्रिया के बाद जल्दी सुधार के लिये, पेट के निचले हिस्से के क्षेत्रों पर अतिरिक्त ध्यान देने के साथ, दूसरे चक्र का उपचार करने से लाभ होगा, लेकिन नवजात शिशु के इलाज की कोई भी आवश्यक नहीं है।

शीत और फ्लूः सर्दी से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए, वायरल बीमारियों आदि से गुजरने वालों को आप जल्दी-जल्दी उपचार दे सकते हैं, लेकिन प्रत्येक चक्र के क्षेत्रों पर कम अवधि अर्थात सामान्य समय का आधा या एक तिहाई समय तक दिया जा सकता है। पीड़ित व्यक्ति के लिए, ये लघु उपचार, एक टॉनिक की तरह हैं, लेकिन एक लंबे समय का इलाज, रोगी के शरीर को थका देता है।

एड्सः आदर्श उपचार के दौरान, ऊर्जा प्रवाह में स्थिरता की गुणवत्ता प्रदान करना, अपने आप में स्थिरता महसूस करना और ऊर्जा को ऊर्जा के रूप में, बजाय इसे ऊर्जा-शक्ति के रूप में देना, एक महत्व प्रक्रिया होती है। रोगी को मजबूत करने की कोशिश करें। आम तौर पर शरीर के पूरे हिस्से और सभी चक्रों पर, एरिक क्षेत्र में रिसाव (लीक) और टूटने (टियर) से ऊर्जा की हानि होती है, अतः इन्हें बिल्कुल ही बंद किया जाना चाहिए। ऊर्जा की भरपाई करने के लिए, लगभग हमेशा आभा चार्ज करना आवश्यक होगा। कुछ चक्र भी एक अनियमित या बीमारीग्रस्त ऊर्जा निकालते हैं, खराब रंग में दिखते हैं, इसलिए उन चक्रों पर लंबी अवधि के लिए अतिरिक्त ऊर्जा उपचार की आवश्यकता होती है।

अक्सर रोगी, फेफड़े और छाती की कमजोरी गुजरता है, अतः ऐसे फेफड़ों के रोगी का इलाज, फेफड़े के रोगों के तहत दिये गये विस्तृत उपचार विधि के अनुसार हमेशा शामिल किया जाना चाहिए। जटिलताएं सामान्य होती हैं और यदि वे स्थानीयकृत की जाती है तो उनका इलाज प्रभावित क्षेत्रों पर हाथ रखकर किया जाना चाहिए। एड्स रोगी को प्रति सप्ताह 2 से 3 बार इलाज किया जाना चाहिए और यदि रोग अधिक बार-बार और गंभीर जटिलताओं में बढ़ता है और मरीज को कमजोर होता है, तो उसकी और भी अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

बर्न्स (जले हुए क्षेत्रों पर)ः जब हाथों को शरीर के जले हुए क्षेत्रों के पर नहीं रखा जा सकता है, तो हाथों को इलाज हेतु जले हुए क्षेत्र से 3 से 5 इंच ऊपर तक रखा जा सकता है और रोगी मे ऊर्जा की अच्छी मात्रा को स्थानांतरित करना होगा, क्योकि यह उपचार प्रक्रिया, हाथ को शरीर की सतह पर सीधे रखने के स्थान पर अधिक प्रभावी नहीं होगी।

टूटी हड्डियों या मोचेः सामान्य उपचार के अलावा पीडित स्थानो पर सीधे हाथ को रखना चहिए।

बच्चेः बच्चों के उपचार हेतु प्रत्येक चक्रों पर एक तिहाई से आधा समय सीमा तक ही सामान्य इलाज दिया जाना चहिये। यह इलाज 8 से 9 दिन के अंतराल पर किया जाना चहिये, इससे अधिक नहीं।

कुछ आवश्यक तथ्यः जब आप नकारात्मकता के आस-पास होते हैं तथा सकारात्मक होने की कोई संभावना नहीं होती है, तो नकारात्मकता का एक ज्वादा हिस्सा आपके आस-पास होने से एक बड़ी समस्या उत्पन्न होती है। इसी प्रकार, जब नकारात्मकता इतनी ताकतवर हो जाती है कि यह किसी भी अच्छे या सकारात्मकता को देखने की आपकी क्षमता को अक्षम कर देता है। तो ऐसा होने पर क्या करना है? यहां कुछ चीजें हैं, जिसे नकारात्मकता के आस-पास होने पर आप कर सकते हैंः

1). उन लोगों के साथ समय व्यतीत करें जो आपको हंसाते हैंः वास्तव में, सकारात्मकता-सकारात्मकता को आकर्षित करती है। अगर कोई दिन आता है, जहां आप सकारात्मकता कम महसूस कर रहे हैं, जहां आप किसी भी प्रकाश को देखने में सक्षम नहीं हैं या दिन के साथ आने की कोई प्रेरणा नहीं है, तो आप सकारात्मक बोलने वाले व्यक्ति से बात करें। हां, हम ऐसे कई लोगों से घिरे हुए हैं जो इस अस्पष्ट प्रकाश का उत्सर्जन करते हैं, जो सभी पहलुओं में अंदर से बाहर तक सकारात्मक हैं, ऐसे लोगों को आसानी से उनकी आँखों में एक शाश्वत चमक के साथ देखा जा सकता है और यदि आपके पास ऐसे किसी भी तरह के लोग हैं,जिनके चेहरे पर एक गर्म मुस्कान है, तो उनके पास जाएं, जब आपको लगता है कि आपके शांति की भावना पर उदासी बल दे रही है। वे लोग चीजों को अपनी सकारात्मकता के साथ बदल सकते हैं

2). अपने आपको कष्ट मत दोः अगर कुछ आपको परेशान कर रहा है, तो कुछ समय के लिए शांतिस्थान में बैठकर, अपने मन की शांति की छीनने के बजाय इसके हल करने के तरीकों के बारे में सोचना चाहिए। वहां पर जो हालात, स्थान और लोग होंगे,वो आपको परेशान करेंगे। लेकिन ऐसे मे सिर्फ बैठकर और परेशान होने से आपको कुछ अच्छा नहीं लगेगा। ऐसे में बस संभव समाधान के बारे में सोचें, इसके बारे में सोचने और कुछ नहीं करने के बजाय चीजों को सुलझाने का प्रयास करें।

3). एहसास है कि यह स्थायी नहीं हैः आपकी चिंताओं की तरह, कुछ भी स्थायी नहीं है। पता है कि यह एक बुरी ज़िंदगी नहीं है, यह सिर्फ एक बुरा दिन है और आप इसके माध्यम से अच्छी चीजे प्राप्त करेंगे। अधिकांश समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जब हम हमारी समस्याओं से भस्म हो जाते हैं, हम यह महसूस करने में सक्षम नहीं हैं कि ये समस्याएं लंबे समय तक नहीं रहेंगी। जीवन उतार-चढ़ाव से भरा हुआ है और यह सिर्फ एक मोटा पैच है, जो पारित होगा और सूरज फिर से चमक जाएगी।

4).खुद को खोना नहीं हैः जब आप उदास हो जाते हैं या जब आप कमजोरी महसूस करते हैं, तो आप इसे किसी आक्रामक तरीके से बाहर निकलने के लिए एक अवसर या एक कारण के रूप में नहीं सोचें। अगर आप कुछ चीजों के बारे में उदास या नाराज हैं, तो आप निश्चित रूप से अपना दिमाग खो देंगे, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि आप दूसरों पर फट पड़े या गुस्सा करें। जब आप उदास या नाराज हो, तो आपकी चतुराई शांत रहने में है। ऐसे में आपको कभी नहीं महसूस नहीं होगा कि आप कब अपनी शांत भंगकर किसी और को अपने अनावश्यक और कठोर शब्दों से घाव देंगे, जबतक आपका क्रोध शांत नहीं होगा लेकिन आपकी उत्तेजना हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी।

अगले अंक भाग-29 मे थीटा हीलिंग ऊपचार पढ़े

pp लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक website: www.pawanprawah.com
पवन प्रवाह
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17
वर्ष 04 अंक 11 लखनऊ। सोमवार 04 से 10 दिसम्बर-2017 e-mail-pawanprawah@gmail.com मूल्य : तीन रूपये पृष्ठ-16